शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X

Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में गोस्वामी तुलसीदास जी के चिंतन की प्रासंगिकता

डॉ0 अमर जीत सिंह परिहार
प्राचार्य,
संकल्प इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेशन,
गाजियाबाद (उ0प्र0)
ईमेलः pariharsingh73@gmail.com

डॉ0 अरूणा सिंघल
निदेशक,
कॉलेज ऑफ एजूकेशन, (कोएड)
गाजियाबाद (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में तुलसीदास के चिंतन से सम्बन्धित चर्चा की गयी है। तुलसीदास का दर्शन यथार्थ मूल्यों को उद्भासित करते हुए बहुमुखी आयामों को निरूपित करता है। तुलसीदास द्वारा मान्य जीवन्मुक्त का स्वभाव लोक कल्याण है। आध्यात्मिक नैतिकता का उदय जीवन्मुक्ति में होता है। जिससे समाज का कल्याण होता है। तुलसीदास का दर्शन लोक कल्याण की दिषा में आगे बढ़ने का संदेश देता है। कर्तव्य के प्रति निःस्वार्थ निष्ठा हमें तुलसीदास के दर्शन में प्राप्त होती है। तुलसीदास का दर्शन एक ऐसा पूर्ण एवं बहुमुखी दर्षन है जिसमें जीवन के समस्त मूल्यों तथा पारमार्थिक स्वरूप पर गहनतापूर्वक विचार प्रस्तुत किया गया है। उनके दर्षन के अनुषीलन से मनुश्य का सामाजिक, नैतिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक आत्मोन्नयन हो सकता है। जिससे यथार्थ एवं पूर्ण जीवन निरूपित किया जा सकता है। उनके दर्षन से एक आदर्ष सजीव समाज की रचना हो सकती हे जिसमें काल्पनिकता का अंष भी न हो। उनका प्रमुख आदर्ष पूर्ण सच्चिदानन्द को इसी जीवन में सम्भव बताना है। इससे धर्म का षाष्वत रूप सामने आयेगा। तुलसीदास का अद्वैत दर्षन समानता, सामंजस्य, सद्व्यवहार की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, अतः उनके विचार वर्तमान युग में अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

प्रस्तावना

तुलसी द्वारा मान्य रामभक्ति रूपी साधन मार्ग सभी के लिए उपादेय हो सकता है। उनकी भावना सार्वभौमिक तथा विष्वजनीय है। तुलसीदास द्वारा अखण्ड साधना से प्राप्त परमतत्त्व को भक्ति द्वारा प्राप्त करने का प्रयत्न अपूर्व है। तुलसी ने भक्ति मार्ग की प्रतिष्ठा करके सभी मार्गों को एक करने का प्रयास किया है जिससे व्यक्ति की आत्मा का उत्थान तथा आत्मिक विकास होने के साथ–साथ जीव चरमोत्कर्ष पर पहुँच कर भगवदाकार हो जाता है।

तुलसीदास के विचार वर्तमान युग के लिए उपादेय हैं। तुलसी के अनुसार विश्व सत्य है जीव, जगत् का ब्रह्म से शरीरी शरीर सम्बन्ध है जो नित्य नियन्ता राम के आधीन है। अविद्या के कारण ब्रह्म एवं जीव के पार्थक्य का बोध होता है। तुलसी के अनुसार भक्ति एवं उपासना

मोक्ष साधन के उपाय हैं। अतः तत्त्व ज्ञान प्रमुख है। हमने तुलसी के दार्शनिक विचारों को निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया हैं हमारी यह विनम्र तथा निश्चित अवधारणा है कि प्रस्तुत शोध पत्र में तुलसी के विचारों के सम्बन्ध में जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं को संतुष्ट करने में सक्षम होगा।''

(1) तुलसी का चिन्तन यथार्थ मूल्यों को उद्भाषित करते हूए बहुमुखी आयामों को निरूपित करता हैं।

(2) तुलसी का चिन्तन लोक कल्याण से आगे बढ़ने का संदेश देता है।

(3) तुलसी के चिन्तन से सामाजिक, नैतिक, भौतिक, शैक्षिक एवं अध्यात्मिक मूल्यों का विकास संभव हैं।

(4) तुलसी का चिन्तन विश्व शांन्ति का भाव जाग्रत करता हैं।

(5) तुलसी के चिन्तन में व्यक्तित्व में निष्काम हृदय की भावना को विकसित करता हैं।

(6) तुलसी के चिन्तन में सभी मार्गो को एक करने का संदेश प्राप्त होता हैं ।

(7) तुलसी के चिन्तनमें व्याप्त रामराज्य की संकल्पना वर्तमान परिप्रेक्ष्य प्रसंगिक हैं ।

तुलसीदास के व्यक्तित्व में निष्काम हृदय तथा समाज सुधारक की लोकमंगल भवना का अद्भुत समन्वय था। उनकी समन्वय साधना बहुमुखी थी।

तुलसीदास समाजदर्शी चिंतक थे उन्होंने समाज के विभिन्न पक्षों को देखा परखा था। उनमें विश्व कल्याण की भावना थी तथा उन्होंने अपने प्रभावपूर्ण विचारों द्वारा लोगों के कष्टों का निवारण करने का प्रयत्न किया। लोकानुभूति उनकी स्वानुभूति थी। उन्होंने कवितावली में दरिद्रता से पीड़ित जनता के हृदय विदारक कष्टों का वर्णन किया है। उनकी रचनाओं में इतना सजीव वर्णन इसलिए है क्योंकि वह स्वयं उस परिस्थिति को भोग चुके थे। तुलसी सार्वजनिक अधिवक्ता थे। तुलसी का लोकदर्शन प्रतिपादित परम्परा के अनुरूप है। वह युग की दशा से प्रभावित होने के कारण ही जनसमुदाय में मंगल विधान के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

तुलसीदास के आविर्भाव के समय देश में मुस्लिम शासकों का पदार्पण हो चुका था। तुलसी के मन में आदर्श रामराज्य की जो कल्पना थी वह उन्हें किसी भी बादशाह के शासनकाल में दिखाई नहीं दी। उस समय शासकों की अपेक्षा कर्मचारी नौकर आदि कहीं अधिक अत्याचारी थे। प्रजा को सुनवायी कहीं नहीं थी। तुलसीदास

सनातनधर्मी थे उनकी दृष्टि में मानव धर्म, वर्ण–धर्म आश्रम– धर्म, राज–धर्म तथा स्त्री–धर्म प्रमुख हैं। उनके अनुसार इन धर्मों के समुचित पालन पर समाज कल्याण निर्भर है। मुसलमानों के अत्याचार के आगे हिन्दू धर्म का प्रसार करना कठिन था। उस समय मानव धर्म विलुप्त सा हो गया था। वर्णाश्रम धर्म की दुर्दशा देखकर उनका हृदय विचलित हो गया। ब्राह्मण भी पथ भ्रष्ट हो गए थे। वे लोक धर्म बंधन तोड़कर मनमानी करने पर उतारू थे।

तुलसीदास ने साम्प्रदायिक समस्या के समाधान के लिए शैव, शाक्त तथा वैष्णवमतों में समन्वय का प्रयास किया। तुलसी के युग में भक्ति आन्दोलन चरम पर था। सम्पूर्ण देश विभिन्न प्रकार की भक्ति धाराओं का केन्द्र था। काशी से राम भक्ति तथा वृंदावन से कृष्ण भक्ति का प्रसार

हुआ जिससे सम्पूर्ण उत्तर भारत उद्वेलित हो गया। तुलसीदास ने रामचरितमानस के द्वारा समाज का मार्गदर्शन किया। ब्रह्म के सम्बन्ध में तुलसी ने वेदान्त दर्शन के समान विचार प्रस्तुत किये हैं। वह ब्रह्म को राम कहते हैं जो एक अखण्ड चिन्मय अविनाषी है। तुलसी के राम माया गुण तथा इन्द्रियों से अतीत तथा प्रकृति से परे हैं। तुलसी ने भी ब्रह्म के तटस्थ तथा स्वरूप लक्षण आदि को श्रुतियों के आधार पर प्रतिपादित किया है। वह ब्रह्म को निर्विशेष तथा सविशेष दो रूपों का स्वीकार करते हैं। वह भगवान् के विश्व रूप विराट रूप तथा अवतार रूप को मान्यता देते हैं। माया के सम्बन्ध में उनका मानना है कि इन्द्रिय विशय तथा जहाँ तक मन की पहुँच है, वह सब माया है तथा ईश्वर की आज्ञा से ही माया जगत् की रचना करती है। माया सम्पूर्ण संसार को नचाती हैं वेदांत के समान तुलसीदास का मानना है कि माया की उपाधि से निरूपाधिक ब्रह्म सगुण सविशेष हो जाता है, माया ईश्वरीय शक्ति है। तुलसीदास सीता को माया रूप स्वीकारते हैं। जीव के सम्बन्ध में उनका कहना है कि सुख दुःख का अनुभव करने वाला शरीरस्थ आत्मा ही जीव है। जीव का विवेचन वह वैशणव वेदान्तियों के समान करते हैं। तुलसी के अनुसार जीव ईष्वर का अंश है। नित्य चैतन्य जीव अविद्या माया के वश में आकर निज स्वरूप को भूल जाता है तथा पंचभौतिक को ही अपना वास्तविक स्वरूप समझकर उससे आसक्त होकर जन्म–मृत्यु रूपी अनर्थ में भटकता हुआ सुख–दुःख भोगता है। जीव के सम्बन्ध में गोस्वामी जी कहीं–कहीं अद्वैत वेदान्त के मत का पालन करते हैं इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे जीव तथा ब्रह्म की अभेदता स्वीकारते हैं।

'सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हहि होइ जाई।
'सो तै ताहि नहि भेदा। बारि बीचि इव गावहिं वेदा।

दूसरी ओर वह यह घोषणा भी करते हैं कि जीव ईश्वर के समान कदापि नहीं हो सकता। तुलसीदास शुद्ध पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म तथा जीव की अद्वैतता मानते हैं किन्तु भक्ति के व्यावहारिक सिद्धान्तानुसार वे इनमें भेद मानते हैं यही तुलसी के विरोध पूर्ण विचारों का कारण है। जगत् के सम्बन्ध में तुलसीदास का मत है कि जगत् रामरूप होने के कारण सत्य है। सृष्टि सम्बन्धित उनके विचार सांख्य दर्शन से साम्य रखते हैं वे राम को जगत् का निमित्त तथा उपादान कारण मानते हैं वह ईश्वर को प्रधान तथा प्रकृति कहते हैं। तुलसी दास भक्ति को उत्कृष्ट मानते हैं। उनके अनुसार निश्चित भक्ति से ही मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। वह वैष्णवों द्वारा मान्य नवधा भक्ति को स्वीकारते हैं मुक्ति के सम्बन्ध में वह जीवन्मुक्ति तथा विदेह मुक्ति दोनों को मान्यता देते हैं।

तुलसीदास लोकदर्शी थे उन्होंने जनता के हृदय की धड़कन को पहचाना तथा रामचरितमानस के रूप में समन्वय का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया जो अपने कवित्वमय भक्तिदर्शनमय कवित्व तथा आमूढ़ पण्डितव्यापिनी लोकप्रियता के कारण अद्वितीय है। दर्शन में आध्यात्म विद्या के तीन प्रमुख स्तम्भ हैं–तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा तथा आचार मीमांसा।

तत्त्वमीमांसा की दृष्टि से तुलसी का मत उचित प्रतीत होता है क्योंकि सम्पूर्ण चराचर जगत एक ही आत्मतत्त्व पर विवर्त है। प्रपंचात्मक भेद व्यावहारिक स्तर पर है। जिसका कारण

परमात्मा की अनिरूद्ध इच्छारूपिणी माया है।

ज्ञानीमांसा उसी आत्मतत्त्व को जानने का उपाय बताती है। ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से आगम प्रमाण ही प्रमुख साधन है जो आत्मतत्त्व का ज्ञान कराता हैं प्रत्याक्षादि प्रमाण उसके सहायक मात्र हैं।

आचार मीमांसा मोक्षमार्ग का विवेचन प्रस्तुत करती है। मोक्ष का प्रधान उपाय तत्त्वज्ञान है यही योगाभ्यास से साध्य है अतः यह तीनों मार्ग अध्यात्मविद्या से सम्बन्धित है।

कोई भी मत चाहे वह द्वैत को स्वीकार करे या अद्वैत को सबका लक्ष्य एक आत्मतत्त्व ही है। तुलसी ने अपने विचार आत्मतत्त्व के स्वरूप को प्रतिपादित करने के लिए प्रस्तुत किए हैं। तुलसी दास जी के विचार वर्तमान युग में लोकोपयोगी तथा कल्याणकारी हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं तथा भविष्य की भावी पीढ़ियों का भी मार्गदर्षन करेंगे।

''निज प्रभुमय देखहिं जगत् केहि सन करहि विरोध''

तुलसीदास का दर्शन आज भी समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उनके द्वारा प्रतिपादित रामराज्य आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक संदर्भ में 'राजा' शब्द सत्ताधारी शासक तथा प्रजा का तात्पर्य है– 'शासित जनता'। भरत के समक्ष राम के राजधर्म को तुलसी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

''मुखिया मुखु सो चाहिए खान पान कहुँ एक
पालइ पोशइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक।।''

तुलसीदास आज के स्वार्थी शासकों को बताते हैं कि निजी हित की आसक्ति त्याग कर जनता की समस्याओं को सुलझाना तथा विवेकपूर्वक जनता का पालन पोषण करना ही उनका परम कर्तव्य है। तुलसी के अनुसार जनता को करों के बोझ से पीड़ित नहीं करना चाहिए तथा उससे प्राप्त आय को जनता के हित में व्यय करनी चाहिए। 'रामराज्य' एक आदर्श शासन व्यवस्था का प्रतीक है जिसमें जनता रोग, शोक, विषमता, द्वेष, बैर, दरिद्रता, दुष्कर्म अपकार आदि से सर्वथा मुक्त हो। सभी नागरिक प्रसन्न सम्पन्न द्वेषरहित, निर्वैर, कर्त्तव्यपरायण, परोपकारी तथा पारस्परिक सौहार्द से युक्त हों। तुलसीदास के विचार विशाल सहृदय समाज के मार्गदर्शक हैं। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है तथा भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगा।

इस प्रकार तुलसीदास का दर्शन वर्तमान युग के लिए उपादेय सिद्ध होता है क्योंकि आज समाज में प्रेम तथा मैत्री का अभाव है। जिसकी पूर्ति के लिए इनके विचार प्रभावपूर्ण है। उन्होंने रामराज्य के माध्यम से समाज की बुराइयां कम करने के लिए विचार प्रस्तुत किए हैं। यदि इनके विचारों को समाज के प्रयोग में लाया जाय तो समाज में व्याप्त बुराइयां दूर हो सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 रानाडे, उपनिशद दर्षन का रचनात्मक सर्वेक्षण, राजस्थान, हि0ग्र0अ0 तष्तीय 1989

2 तिलक लोक बालगंगाधर, श्रीमद्भगवतगीता रहस्य अथवा कर्मयोग षास्त्र, जयन्त श्रीधर तिलक, पूना–2, बारहवां 1962

3 षर्मा श्रीराम, मीमांसा दर्षन, संस्कृति संस्थान बरेली, 1964

4 लाल बी0के0, समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी प्रथम–1991

5 पाण्डेय संगम लाल, भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, तृतीय, 1999

6 बंदिष्टे डी0डी0, भारतीय दार्शनिक निबंध मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, तृतीय 1995

7 गुप्त दीनदयाल, तुलसीदर्शन मीमांसा

8 मिश्र बलदेव प्रसाद, तुलसी दर्शन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

9 तिवारी डॉ0 गोपीनाथ, सिंह भगवती प्रसाद, तिवारी रामचन्द्र, श्रीवास्तव परमानन्द, तुलसीदास : विभिन्न दृष्टियों का परिप्रेक्ष्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी चौक भलूपुर, वाराणसी

10 डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, भारतीय दर्शन, राजपाल एण्ड संस, कष्मीरी गेट, दिल्ली–6

11 लाल रमन बिहारी,विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक, आर0 लाल पब्लि0 मेरठ,2018

12 परिहार,अमरजीत सिंह एवं अन्य,शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार,आर0 लाल पब्लि0 मेरठ,